लिंगाष्टकम् ।

ब्रह्ममुरारि-सुरारर्चितलिंग निर्मल-भासित-शोभिन-लिंगम् ।
जन्मज-दुःखविनाशक-लिंगतत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥१॥

देवमुनि-प्रवरार्चित लिंगं का दंड करुणाकरलिंगम् ।
रावणदर्प-विनाशन लिंगं तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम् ॥२॥

सर्वसुगंन्धि-सुलेपितलिंगं बुद्धि-विवर्धन-कारणलिंगम् ।
सिद्ध-सुरा-सुर-वन्दितलिंगं तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम् ॥३॥

कनक-महामणि भूषितलिंगं फणिपति-वेष्टित-शोभितलिंगम् ।
दक्षसुयज्ञ-विनाशकलिंगं तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम् ॥४॥

कुमकुम-चंदन लेपितलिंगं पंकजहार-सुशोभितलिंगम् ।
सञ्चित-पाप विनाशन लिंगं तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम् ॥५॥

देवगणार्चित-सेवितलिंगं भावैर्भक्तिर्भिरेव च लिंगम् ।
दिनकरकोटि-प्रभाकर लिंगं तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम् ॥६॥

अष्टदलोपरि वेष्टितलिंगं सर्वसमुद्भव कारणलिंगम् ।
अष्टदरिद्र-विनाशितलिंगं तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम् ॥७॥

सुरवर-गुरुवर पूजितलिंगं सुरवनपुष्प-सदार्चितलिंगम् ।
परात्परं परमात्मक लिंगं तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम् ॥८॥

लिंगंमृकदिं पुण्यं यःपठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥९॥